यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना **जय महावीर** **जय गुरु राम**

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2019

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 11 तत्त्व

अंक 100

नाम..... पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम..... जन्मतिथि..... मोबाइल..... रोल नं .....

नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान हैं तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

पेपर 97 अंक एवं 3 अंक सामायिक के हैं। जैसे :- 3 सामायिक करने पर 3 अंक दिए जाएगे और 2 करने पर 2 अंक इसी क्रम में सामायिक न करने पर 3 अंक काटे जाएंगे।

1- lerk lLdkj ikB'kkyk d fo|kFkh gk rk ¼✓½ lgh ;k ¼✗½ xyr djA ¼ ½

2- vkiu fdruh lkekf;d dh g 1]2]3 dkye e fy[kA ¼ ½

(तत्त्व विभाग) जीव धड़ा

प्रश्न 1. अंको में उत्तर दीजिए- **10**

1. तिर्यक लोक मे देवता के कितने भेद पाए जाते है-

.....।

2. अवधि ज्ञानी में तिर्यंच के कितने भेद पाए जाते है-

.....।

3. महाविदेह क्षेत्र मे कितने चारित्र पाए जाते है-

.....।

4. वैक्रिय मिश्र काय योग में देवता के कितने भेद नहीं पावे-

.....।

5. चुम प्रभा पृथ्वी में कितनी लेश्या पायी जाती है–

.....।

6. रसनेन्द्रिय के अलद्धिये में पृथ्वीकाय के कितने भेद पावे–

.....।

7. ईशान देवलोक में कितने भेद पावे–

.....।

8. विभंग ज्ञान में अपर्याप्त के कितने भेद पावे–

.....।

9. अभाषक में मनुष्य के कितने भेद पावे–

.....।

10. हुडंक संस्थान और सेवार्त्तक संहनन में ऐसे कितने भेद है जो दोनों में पाए जाते है–

.....।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ती कीजिए– **10**

1. अर्द्ध पुष्कर द्वीप में जीव के जितने भेद पाए जाते है उतने ही भेद ..... में पाए जाते हैं।
2. मति श्रुतज्ञान ..... के गर्भज मनुष्यों में नहीं पाया जाता है।
3. ..... पृथ्वी के अपर्याप्त नैरयिक में एक भी समकित नहीं पायी जाती हैं।
4. अभाषक संज्ञी तिर्यंच पंचे जीव ..... है।
5. 86 युगलिक अपर्याप्त अवस्था में ..... होते है।
6. पाँच लेश्या ..... भी जीव में नहीं पायी जाती हैं।
7. वचन योग में जितने भेद पाए जाते हैं उतने ही भेद ..... वचन योग में पाए जाते है।
8. पाँच महाविदेह क्षेत्र में मनुष्य के ..... के भेद पाए जाते है।
9. त्रयोदश सागरिक देवों में ..... लेश्या पायी जाती है।
10. पर्याप्त संज्ञी जीवों में ही ..... योग पाया जाता है।

प्रश्न 3. जोड़ी मिलाओ– **10**

1. विजय विमानवासी देव	A. बादर तेउकाय
2. चार लेश्या	B. 191
3. अवधि दर्शन	C. भव्य

4. कलोदधि समुद्र	D. 50 देवता
5. अधोलोक	E. पुरूष वेद
6. असंज्ञी जीव	F. 371
7. समचोरस संस्थान	G. 213
8. लवण समुद्र	H. 247
9. मरने वाले	I. 56 अन्तर्द्वीप
10. एकान्त मिथ्यादृष्टि मनुष्य	J. 277

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए- **15**

1. सम्यग्दृष्टि में जीव के कितने और कौन-कौन से भेद पाए जाते है?

.....।

2. 15 कर्मभूमि का पर्याप्त मनुष्य कब अनाहारक होता है?

.....।

3. 3 जीव के 563 भेदों में से अपर्याप्त में कितने भेद पाए जाते है और कौन-से?

.....।

4. अधोलोक में पाए जाने वाले देवता के भेदों को अगर सम्यग् मिथ्यादृष्टि के भेदों में जोड़ दिया जाए तो आने वाली संख्या वाले जीव किसमें पाए जाते है?

.....।

5. तेजो लेश्या में तिर्यंच के कितने भेद पाए जाते है? कौन से?

.....।

6. अनिन्द्रिय में जीव के कितने भेद पाए जाते है? गुणस्थान बताए?

.....।

7. सिद्धशिला में और सिद्धशिला के ऊपर जीव के कितने भेद पाए जाते है और कौन से?

.....।

8. शाश्वत में जीव के 563 भेदों में से कौन से भेद नही पाए जाते है?

.....।

9. क्षायिक समकित में तिर्यंच पंचेन्द्रय के कितने भेद पाए जाते है और कौन से?

.....।

10. अभाषक में कितने भेद पाए जाते है? उनमें कितने भेद पर्याप्त के है और कौन से?

.....।

कर्म स्तोक मंजूषा

बंध, उदय, उदीरणा और सत्ता अंक–55

प्रश्न 1. हाँ या ना में उत्तर दीजिए– 10

1. अप्रमत मुनि के अस्थिर षट्क का बंध होता है– ( )
2. छठे गुणस्थान वर्ती साध्वी के सत्यानर्द्धि त्रिक का उदय हो सकता है– ( )
3. निवृत्ति बादर गुणस्थान सत्ता वाला तक सम्यक्त्व मोहनीय का बंध रहता है– ( )
4. मनुष्यायु का सत्ता वाला जीव श्रेणी चढ़ सकता है– ( )
5. नवें गुणस्थान के पहले भाग में अप्रत्याख्यान चतुष्क और प्रत्याख्यान चतुष्क की सत्ता विच्छेद होती है–( )
6. सास्वादन सम्यक्त्व वाले जीव के नरकानुपूर्वी का उदय नहीं होता है– ( )
7. आहारक द्विक का बंध करने वाले अणगार के सातावेदनीय की उदीरणा नहीं होती है– ( )
8. पंचसंग्रह के अनुसार अनंतानुबंधी चतुष्क का उपशम करके जीव उपशम श्रेणी आरोहण करता है ( )
9. वज्रऋषभ नाराच संहनन का बंध आठवें गुणस्थान तक होता है– ( )
10. कषाय के निमित्त से स्थिति और अनुभाग का बंध होता है– ( )

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए– 10

1. प्रमत योगों से प्राणों का अतिपात ..... कहलाता है।
2. आतप नाम कर्म का उदय शरीर पर्याप्ति से पर्याप्त बादर ..... पृथ्वी कायिक जीवों के होता है।
3. ग्रन्थकारों ने वैक्रिय अष्टक का उदय ..... गुणस्थान तक ही माना है।
4. ..... के द्वारा ही श्वासोच्छवास वर्गणा के पुद्गलों का ग्रहण व निस्सरण होता है।
5. संज्वलन मान का क्षय ..... भाग के अंतिम समय में हो जाता है।
6. ..... शरीरी जीव के वज्रऋषभनाराच संहनन नामकर्म का उदय होता है।
7. चारित्र मोहनीय कर्म की प्रकृतियों में अनंतानुबंधी कषाय चतुष्क सबसे अधिक ..... है।
8. नैरयिक भव स्वभाव से ही तीसरे गुणस्थान में ..... प्रायोग्य प्रकृतियों का बंध करते है।
9. उदय के अभाव में किसी भी प्रकृति की ..... नहीं होती है।
10. उच्चगोत्र का बंध ..... के सद्भाव में होता है।

प्रश्न 3. निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए (संक्षेप में) 10

1. अनिवृत्ति बादर गुणस्थान के दूसरे भाग के अंत में किस प्रकृतियों का बंध विच्छेद होता है?

.....

.....

.....

.....

.....।

2. एकेन्द्रिय में किस प्रण्य प्रकृति का उदय रह सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....।

3. सम्यक्त्व मोहनीय का बंध किस गुणस्थान तक होता है?

.....

.....

.....

.....

.....।

4. दुःस्वर प्रकृति पुद्गल विपाकी है या जीव विपाकी?

.....

.....

.....

.....

.....।

5. अपर्याप्त नाम कर्म की सत्ता कौन से गुणस्थान में खत्म होती है?

.....

.....

.....

.....

.....।

6. आठवें गुणस्थान के छठे भाग में नाम कर्म की कितनी प्रकृतियों का बंध विच्छेद होता है।

.....

.....

.....

.....।

7. पुद्गल विपाकी प्रकृतियों का उदय कितने गुणस्थान तक रहता है?

.....

.....

.....

.....।

8. वैक्रिय द्विक की उदीरणा किस गुणस्थान तक होती है?

.....

.....

.....

.....।

9. वैक्रिय अंगोपाग और औदारिक अंगोपांग का बंध किस गुणस्थान तक होता है?

.....

.....

.....

.....।

10. ऐसी कौन-सी प्रकृतियाँ है जिसका बंध जीव अप्रमत अवस्था में ही करता है परन्तु उनका उदय प्रमत अवस्था में होता है?

.....

.....

.....

.....।

प्रश्न 4. जोड़ी मिलाइए- **5**

1. मिथ्यादृष्टि जीव	A. 87
2. 67	B. 57

3. निवृत्ति बादर गुणस्थान	C. नीच गोत्र
4. अचरम शरीरी क्षायिक सम्यक्त्वी	D. क्षपक श्रेणी
5. सूक्ष्म संपराय गुणस्थान	E. नो कषाय
6. मत्स्य जलचर श्रावक	F. निद्रा द्विक
7. अप्रति पाति	G. सूक्ष्म त्रिक
8. हास्य	H. 141
9. उपशम श्रेणी	I. सास्वादन स्मयक्त्व गुणस्थान
10. 111	J. 72

प्रश्न 5. निम्न प्रकृतियों का बंध और उदय किस गुणस्थान तक है– 10

1. ऋषमनाराच संहनन	6. सुस्वर
2. मनुष्यानुपूर्वी	7. अरति
3. वीर्यान्तराय	8. प्रत्याख्यानावरण चतुष्क
4. तेजस् शरीर	9. यशाकीर्त्ति
5. सुस्वर	10. तिर्यचायु

प्रश्न 6. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए– 7.50

1. साता/असाता वेदनीय की उदीरणा छठे गुणस्थान तक ही क्यों होती है?

.....

.....।

2. कर्मग्रन्थ के मतानुसार और पंच संग्रह व कम्म पयडी के अनुसार अचरम शरीरी उपशम सम्यक्त्वी के कितनी प्रकृतियों की सत्ता रहती है? कारण बताये?

.....

.....।

3. जीव भाषा वर्गणा के पुद्गलों को किससे ग्रहण और निस्सरण करता है?

.....

.....।

4. आयुष्य के बंध के समय जीव के परिणाम कैसे होते है? कितने समय तक जीव आयुष्य का बंध करता है और किस गुणस्थान तक?

.....

.....।

5. जिननाम का बंध जीव किन गुणस्थानों में करता है ओर उसका उदय किन गुणस्थानों में होता है तथा सत्ता विच्छेद कब होता है?

.....

.....।

.....।

प्रश्न 7. 14 वें गुणस्थान के द्विचरम समय में कितनी प्रकृतियों की सत्ता का विच्छेद होता है? उन प्रकृतियों के नाम कर्म की कितनी प्रकृतियाँ है? नाम कर्म के अलावा अन्य कर्मो की प्रकृतियों के नाम लिखे? **2.5**

.....

.....

.....

.....

.....

.....।